इस आयोग के सम्मुख जनता को अपनी शिकायतें मौखिक या लिखित रूप से पेश करने का हक होता। आयोग उनकी शिकायतें सुनकर, तत्काल कार्यवाही या उत्तर देने हेतु शिकायतों को उपयुक्त अधिकारियों तक पहुंचाता।

दूसरी और कर्मवीरों की तथा प्रचार करने वालों की संख्या भी बढ़ती गयी। इस प्रकार स्वचालित आंदोलन का प्रयोग एंव प्रदर्शन किसी दिन हरिद्वार और पूरे देश में स्वचालित शासन का स्वप्न साकार कर सकता है।

मानवीय पतन का एकमात्र कारण अधिकारों का दुरूपयोग, जीवन जीने की कला का अभाव, जीवन मूल्यों की अवहेलना और जीवन के उद्देश्य को भूल जाना है। यह भूल हरिद्वार में नहीं की गई। हमारे संविधान में मानवाधिकारों की व्याख्या तो कर दी गयी है परन्तु कर्तव्यों-उत्तरदायित्वों के वहन करने एवं उन्हें अंजाम देने का कोई तंत्र नहीं बनाया गया।

इसी कारण वर्तमान राजनीतिज्ञों एवं शासकों ने आधुनिक राजनीति को "आस्थाविहीन धर्म-निरपेक्ष राजनीति" के रूप में स्थापित कर धर्म एवं श्रेष्ठता के जीवन-मूल्यों, आदर्शों एवं मर्यादाओं से अपने को उन्मुक्त कर लिया है।

इस प्रकार जीवन में जो भी महत्वपूर्ण है, जो भी जीवन के लक्ष्य हैं, जो भी श्रेष्ठ है, राजनीति को उससे कोई प्रयोजन नहीं है।

इसके विपरीत हमारी कर्तव्य आधारित धर्मसत्ता, लोकसत्ता एवं सामाजिक सत्तायें एकीकृत रूप में इतनी सबल एवं सक्षम थीं, विवशता की हद तक, यह व्यवस्था इतनी बाध्यकारी थी कि कर्त्तव्य आधारित राजनीतिक शक्ति का व्यवहारिक पक्ष 20-25 हजार वर्षों तक दूषित, भ्रष्ट, अपराधी एवं शोषित होने से बचा रहा।

जनशासन या स्वराज्य का अर्थ

इस प्रकार जन परिषदों का कार्य प्राथमिकता से राष्ट्रीय स्तर तक नागरिक परिषदें गठित कर 100 करोड़ जनता एवं नागरिकों का स्वराज्य स्थापित कर और जनता की पूरे देश में विशाल व विस्तृत महा-यूनियन संगठित कर जनता के खजाने से वेतन पाने वाले शासकों एवं वोट पाने वाले विधायकों, सांसदों और नौकरशाही के कार्यकलापों की निगरानी करना है। साथ ही साथ उन्हें कर्त्तव्यपरायण, उत्तरदायित्व एवं सरकार या अपनी पार्टियों की बजाय जनता के प्रति समर्पित और जवाबदेही के लिये विवश करना है।

बड़े-बड़े आश्रम एवं कुछ नागरिक जो अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी कर चुके हैं, वे गुरूकुल, उद्योग, ट्रैनिंग स्कूल आदि खोलकर बच्चों को संस्कार, शिक्षा, विद्या, रोजगार-परक उद्यमी शिक्षा, योग-व्यायाम की व्यवस्था कर सकते हैं। स्वदेशी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करके अधिक से अधिक रोजगार के अवसर हम सबको मिलकर पैदा करने हैं ताकि हम अपने बच्चों और नौजवानों को रोजगार देकर स्वदेशी एवं स्वावलम्बी बना सकें।

ग्राम स्वराज्य लाना एवं समाज में पंच-परमेश्वर परक न्याय स्थापित करना अनिवार्य है। दण्ड व्यवस्था में सुधार कर समाजिक बहिष्कार एवं प्रायश्चित व्यवस्था को भी पुनर्जीवित किया जाना चाहिये।

यू.ए.चार्टर-मानवाधिकार-संविधान प्रदत्त मूल अधिकार आधारित

राजनैतिक अधिकारों की परिणिति

शोषण, अत्याचार, आतंक एवं युद्ध

विश्व के हर काल और युग में काल-पुरुष और युग-पुरुष हुये हैं। युग-पुरुषों में राम, कृष्ण, बुद्ध, क्राइस्ट, मोहम्मद, शंकराचार्य, चाणक्य, सम्राट अशोक, दयानन्द, विवेकानन्द, आइन्सटाइन, गाँधी, माओ, आदि बहुत से नाम गिनाये जा सकते हैं।

परन्तु इनमें से कोई भी युग पुरुष, युद्धों को बार-बार दोहराये जाने से रोक नहीं सका। उनके द्वारा किसी ऐसी कारगर व्यवस्था की स्थापना का सूत्रपात भी अब तक नहीं किया जा सका जिसके विकास के द्वारा युद्धों की विभीषिका को रोका या कम किया जा सके।

अतः जो कोई भी युद्धों का प्रत्यावर्तन रोक सके, युद्ध के होने की संभावना को समाप्त कर सके, वह युगों-युगों में होने वाले आज तक के युग-पुरुषों में सर्वोपरि होगा, सर्वोत्तम